09 / 02 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मधुबन निवासियों की विशेषता

➢➢ मैं आत्मा मधुबन निवासी हूँ...

➳ _ ➳ रूहानी उड़ान भरते हुए पहुँच गई मधुबन भूमि पर...

→ यहाँ की शीतल हवाएं रूहानियत की खुशबू फैलाते हुए

- मेरा स्वागत कर रही हैं...

→ मंद-मंद मुस्कुराते हुए यहाँ की प्रकृति

- मुझ पर फूल बरसा रही है...

→ ऊँचे-ऊँचे पहाड़

- उंच ते उंच परमात्मा की महिमा में गीत गा रहे हैं...

→ ये पावन भूमि -

- बाप-दादा की चरित्रभूमि है..
- कर्मभूमि है..
- वरदान भूमि है..
- अवतरण भूमि है..
- परमात्मा से मधुर मिलन की भूमि है..
- बेहद का घर है..
- पूरे विश्व का लाइट हाउस है..
- श्रेष्ठ संकल्पों की भूमि है..
- सहज पुरुषार्थ की भूमि है..
- विश्व कल्याण की भूमि है..
- विश्व-सेवा का मुख्य केन्द्र है..
- रूहानी फरिश्तों का बगीचा है..

➳ _ ➳ मेरे कदम बढ़ रहे हैं बाबा की कुटिया की ओर...

→ बापदादा अपने किरणों की बाँहों में

- मुझे समा लेते हैं...

→ अपना प्यार मुझ पर बरसाते हुए

- स्नेह के झूले में झुला रहे हैं...

→ वरदानों की फुलझड़ी से

- मेरे भाग्य को रोशन कर रहे हैं...

➳ _ ➳ फिर मैं आत्मा डायमंड हाल पहुँच जाती हूँ...

→ फरिश्तों की सभा में..

→ दिव्य तेजस्वी अव्यक्त फ़रिश्ता आकर

- दादी के तन में विराजमान हो जाते हैं..

→ बापदादा के मधुर महावाक्य पूरे हाल में गूँज रहे हैं..

- डायमंड रूपी महावाक्यों को सुन
  - मैं आत्मा डायमंड बन रही हूँ...

➳ _ ➳ साकार रूप में निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ महारथियों की पालना ले रही हूँ

→ अव्यक्त बापदादा की पालना के साथ

- दादी, दीदियों, वरिष्ठ भाइयों की पालना ले रही हूँ...

→ बाबा से साकार में पालना ली हुई श्रेष्ठ आत्माओं की

- साकार पालना मिल रही है..
- अपनी साकार पालना के अनुभवों से
  - मुझे प्रेरणा दे रहे हैं..

→ कितना श्रेष्ठ भाग्य है मेरा

- डबल पालना की विशेष लिफ्ट मिल रही है..
  - बना-बनाया सब साधन प्राप्त हो रहे हैं..

➳ _ ➳ फिर शांति स्तम्भ के सम्मुख बैठ जाती हूँ...

→ शांति के सागर से शांति की किरणों को ग्रहण कर

- मास्टर शान्ति का सागर बन
- पूरे विश्व को शांति की किरणें दे रही हूँ..
  - सभी अशांत आत्माएं शांत हो रही हैं..

➳ _ ➳ मैं आत्मा हिस्ट्री हाल की ओर बढती हूँ...

→ हिस्ट्री हाल में बाबा, मम्मा की दृष्टि ले रही हूँ..

→ हॉल में लगे श्रेष्ठ आत्माओं के चित्रों को देख रही हूँ..

→ उनके चरित्र को जान अपने श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण कर रही हूँ..

→ सारा व्यर्थ चिन्तन, कमज़ोरी की बातें भस्म हो गई हैं..

- अब मैं आत्मा किसी के भी कमजोरी को
  - ना धारण करती हूँ..
  - और ना ही वर्णन करती हूँ..

→ बीती हुई बात को भी रहमदिल बन समा रही हूँ..

→ कोई संस्कार वश उल्टा करता या सुनाता है

- तो भी उसे समा लेती हूँ..
- समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति
  - मनसा सेवा करती हूँ..
- सहयोगी बन मनसा से या वाणी से
  - उनको भी आगे बढ़ा रही हूँ..

➳ _ ➳ सदा स्वयं को मधुबन निवासी समझ बेहद की सेवा कर रही हूँ...

→ विश्व-कल्याणकारी स्टेज पर स्थित मैं आत्मा

- सेवा के कार्य में अपना तन-मन और
- शक्तियों का खज़ाना लगा रही हूँ..

→ अपने रूहानियत की वृत्ति से चारों ओर

- रूहानी अव्यक्त वातावरण बना रही हूँ..

→ मधुबन में आये हुए मेहमानों की

- मनसा-वाचा-कर्मणा सेवा कर रही हूँ..

→ मुझे देख सर्व आत्मायें सहज फॉलो करना सीख रही हैं..

→ सभी आत्माएं तृप्त होकर सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट दे रही हैं..

→ खुश होकर बापदादा भी मुबारकबाद दे रहे हैं..

→ प्रत्यक्ष फल के साथ-साथ भविष्य फल की अधिकारी बन रही हूँ..

- नैचुरल खुशी और हल्केपन की अनुभूति हो रही है..
- त्याग, निष्काम भाव और निमित्त भाव से सेवा कर
- चढ़ती कला में जा रही हूँ..

→ अथक सेवाधारी, तीव्र पुरुषार्थी व निरन्तर सहजयोगी

- स्थिति का सर्टिफकेट ले रही हूँ..

→ चाहे कहीं भी रहूँ सदा स्वयं को

- मधुबन निवासी समझ
  - अपना श्रेष्ठ और महान भाग्य बना रही हूँ..